सत्ता की राजनीति और जयप्रकाश नारायण

डॉ. रामाशीष शर्मा

आधुनिक भारत के निर्माण में जयप्रकाष नारायण का अतिमहत्वपूर्ण योगदान रहा है जय प्रकाष नारायण मार्क्सवाद से प्रभावित होने के बावजूद गाँधी वादी विचारधारा के थे बीसवीं षताब्दी के महत्वपूर्ण राजनेताओं में लोकनायक जयप्रकाष नारायण का नाम बड़े ही आदर और सम्मान के साथ लिया जाता था।वे राजनीति में रहकर भी सत्ता के लोलुप कभी नहीं रहे। जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक दर्शन को दो वर्गों में विभाजित करके देखा जा सकता है। क्रांति के नियंता के रूप में और क्रांति के रक्षक के रूप में। आजादी के पूर्व उनकी भूमिका क्रांति के नियन्ता के रूप में है। ब्रिटिश सत्ता को भारत से निकाल बाहर करने के लिए उन्होंने जो कार्य किया है उसे आने वाली पीढ़ी हमेशा आदर के साथ याद करेगी। जब भी किसी क्रांतिकारी की जेल यातना के बारे में चर्चा होगी तो उसमें सर्वप्रथम जयप्रकाश नारायण की चर्चा होगी। 1942 के महानायक के रूप में जयप्रकाश नारायण देश के सामने आये। उस समय भारत के नवयुवकों पर कुछ ही नेताओं का विशेष प्रभाव था जिसमें जयप्रकाश नारायण सबसे ऊपर है।